स्वच्छ दुग्ध उत्पादन

पशु पालन विभाग
हिमाचल प्रदेश, शिमला-5

टोल फ्री:- 1800 180 8006

स्वच्छ दुग्ध उत्पादन

स्वच्छ दूधः– वह दूध जिसमें कोई गंदगी दिखाई न देती हो और स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छी सुगंध या पोष्टिकता वाला हो, उसे स्वच्छ दूध कहते हैं। इसमें रख रखाव के गुण भी अधिक होते हैं व बैक्टीरिया की संख्या तथा दृष्टिगोचर पदार्थ कम से कम हो ।

सुरक्षित दूधः– वह दूध जिसमें दृष्टिगोचर पद्दार्थ तथा हानिकारक जीवाणु बिल्कुल नहीं पाए जाते हैं और जीवाणुओं की संख्या भी बहुत कम होती है तथा मनुष्य के उपयोग के लिए स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से पूर्णतः सुरक्षित होते हैं। इसमें रख रखाव गुण भी अधिक होता है परन्तु प्रत्येक स्वच्छ दूध हमेशा सुरक्षित होना प्रमाणित नहीं करता।

स्वच्छ दुग्ध उत्पादन के उद्देश्य –

1. दूध को दृष्टिगोचर गंदगी रहित प्राप्त करना।
2. कम जीवाणुओं वाला दूध प्राप्त करना।
3. ऐसा दूध जिसमें हानिकारक जीवाणु न हों, प्राप्त करना।
4. गंध रहित दूध प्राप्त करना।
5. अस्वच्छ दूध से फैलने वाली बीमारियों की रोकथाम के लिए।
6. अच्छे दूध पद्दार्थ बनाने के लिए।
7. अधिक व्यवसायिक मूल्य प्राप्त करना।
8. लम्बी दूरी तक परिवहन में सहायक।
9. ग्राहकों को स्वास्थ्य की दृष्टि से दूध प्राप्त कराने हेतु।

स्वच्छ दूध उत्पादन के लिए आवश्यक चीजें–

1. स्वस्थ एंव स्वच्छ गाय।
2. स्वस्थ एंव स्वच्छ ग्वाला।
3. साफ, जीवाणुरहित, दूध दुहने वाली सूखी बाल्टी जिसका भाग ऊपर से ढका हो।
4. गाय के पैर बांधने वाली ग्वाले की रस्सी।
5. बर्तन के लिए 2 प्रतिशत धोने वाले सोडे का घोल।

6. क्लोरीन का घोल।
7. छनना।
8. स्वच्छ दुग्धशाला।
9. सफेद एप्रेन।

दूध प्रदूषित करने वाले यन्त्र

आन्तरिक या भीतरी स्त्रोत

1. थनैला रोग ग्रस्त अयन
2. प्रथम दूध

बाहरी स्त्रोत

1. गाय
2. अयन
3. गाय की त्वचा और फलैन्क हिस्सा
4. ग्वाला
5. बर्तन
6. गौशाला
7. दोहने का ढंग
8. चारा पानी एंव सब्जियां आदि

अस्वच्छ दूध से फैलने वाली बिमारियां

(क)पशुओं द्वारा

1. टी.बी.
2. त्रंगित बुखार चेचक
3. मिल्क सिकनेस

(ख) मनुष्य द्वारा

1. टाइफाइड
2. पैराटाइफाइड
3. डिप्थीरिया
4. कॉलरा
5. पेचिस
6. दस्त

स्वच्छ दुग्ध उत्पादन विधि एंव दूध प्रदूषित करने वाले कारणों को रोकने के उपाय

कम	दूध को प्रदूषित करने वाले कारक	साफ-स्वच्छ दूध उत्पादन के लिए वांछित उपाय
क	आन्तरिक कारक	
1.	थनैला रोग ग्रसित अयन	1. प्रथम दूध की कुछ धार स्ट्रिप कप में डालकर परीक्षण करें। 2. होटिस टेस्ट या केलिफोरनियन थनैला परीक्षण करें। यदि थनैला पाया जाता है तो दूध को फेंक दें। 3. थनैला संभावित एंव ग्रसित सभी पशुओं को हमेंशा दोहने के अन्त में दुहा जाए।
2.	प्रथम दूध	प्रत्येक थन से कम से कम दो धारें अवश्य बाहर निकाल दें और बर्तन में न इकट्ठा करें इससे जीवाणु की संख्या कम हो जाएगी।
ख	बाह्य कारक	
1	गाय त्वचा	1. गाय को दोहने से एक घंटा पहले ब्रश से साफ करेंपिछला हिस्सा धोयें, पूंछ को पिछले पैरों के साथ दोहने के समय बांध दें। अयन के बडे बालों को काट दें। पूंछ को पिछले पैरों के साथ दोहने के समय बांध दें। अयन के बडे बालों को काट दें। 2. गाय स्वस्थ हो, रोग ग्रसित न हो।
2	अयन	1. अयन को धोयें, साफ तौलिये से पोंछ लें। 2. दोहने के समय थन सूखा रहे।
3	ग्वाला	1. स्वस्थ हो, नाखून कटे हों,सिर टोपी से ढका हो,स्वच्छ आदतें हैं (जिसमें दोहन के समय बातचीत करना,थूकना, पान खाना,सिगरेट पीना,छीकना)वर्जित है। 2. हाथों को 200पी.पी.एम. क्लोरीन घोल से धोएं।
4	बर्तन	1. साफ एंव जीवाणु रहित हो, स्टेनलेस स्टील याग्लैवनाइज्ड लोहे के बने हों ताकि जंग न लग सके। 2. जोड़ रहित हो तथा प्रयोग से पहले क्लोरीन घोल से धो लें।
5	दुग्धशाला	दीवारों पर सफेदी की हो, जालें व धूल तथा गंदगी न हो। बुरी गंध न हो।, फर्श साफ व जीवाणु नाशक घोल का छिडकाव हो, प्रकाशमय हो,हवा का अच्छा आवागमन हो।
6	चारा पानी	1. चारे में हानिकारक व गंधित खरपतवार नहीं होने चाहिए। धूलमय चारा जैसे हे और भूसा, दोहन के बाद खिलाया जाए। गंध वाला चारा जैसे साइलेज भी दोहन के बाद ही दिया जाए। 2. प्रयोग में लाने वाला पानी स्वच्छ एंव कीटाणु रहित हो।
7	दोहन का ढंग	1. पूर्ण हस्त(मुठ्ठी विधि का प्रयोग) दोहन करें। 2. सूखे हाथों से दोहन करें।
8	अन्य	1. दूध निकालने के बाद उसको छान लें। ढककर रखें। मक्खियों से दूर रखें। 2. दूध को कम तापकम 4डिग्रीc से 0डिग्रीc पर रखा जाए ताकि जीवाणुओं की संख्या न बढ़ने पाए।